मेरा पन्ना

एक दिन जब मैं क्रिकेट खेल रहा था

एक दिन जब मैं क्रिकेट खेल रहा था तब हमारे खेल के बीच में ही कुछ आवाज़ आई। वह आवाज़ एक ऑफिस से आई। कोई तो भी बोल रहा था कि इस आफिस में बार-बार आप की बॉल आ रही है। हम सब ने बोला कि ठीक है। अब फिर से बॉल नहीं आएगी। कुछ देर बाद फिर से वही आवाज़ पास से आई। हम सब ने पीछे मुड़कर देखा तो एक दारू पिया हुआ आदमी जैसा आया। मेरे मित्र का वॉचमेन उसे भगा रहा था। तब उसने कहा कि कोई भी टूर्नामेन्ट काकिनाडा में हुआ तो इन सबको ही हमारी टीम को जिताना है। पर वह वॉचमेन मान नहीं रहा था। तब उस दारूकुट्टे ने हमसे बैट माँगा। हमें पता ही नहीं था कि वह दारूकुट्टा था। थोड़ी देर बाद मुझे लगा कि वह दारूकुट्टा है। वह हमें गालियाँ दे रहा था। वह बोला कि मैं बॉलिंग करूँगा। हमने उसे बॉल दे दी। उसने बोला कि उसके बॉल पर कोई भी रन नहीं बना सकता। पर उसने बॉल डाला और छक्का चला गया। वह बोला और दो बॉल डालने पर चला जाएगा। बॉल डालने से पहले उसने एक तेलगु गाना बोला *कोड़ते कोटालिश सिक्सु कोटा ली* और फिर उसने बॉल डाला। वह बॉल सीधा जाकर नाली में गिरा। हमें बहुत गुस्सा आया। मेरे एक दोस्त ने नाली में से बॉल निकालकर धोकर पॉकेट में रख लिया और बोला अब बॉल चला गया है। अब तुम्हें ही खरीदकर लाना पड़ेगा। वह मेरे दोस्त का बैट लेकर जा रहा था। मेरे दोस्त ने भी उसकी चप्पल लेकर फेंक दी। उसे पता नहीं था। फिर उस दारूकुट्टे ने बोला कि मैं यहाँ से किसी की भी चप्पल लेकर जाऊँगा। किसी ने तो भी उसकी चप्पल लौटा दी। फिर उसने उसके पॉकेट से दारू की बाटल निकाली और बोला किसी को भी पीना है तो पी लो। हम सब गेट के अन्दर चले गए। उतने में ही मेरे दोस्त के पापा आए और उसे जाने को बोले। तो भी वह कुछ-कुछ बोलकर चला गया।

–दीपांकर लोंढे, पाँचवीं, काकीनाडा, आंध्रप्रदेश

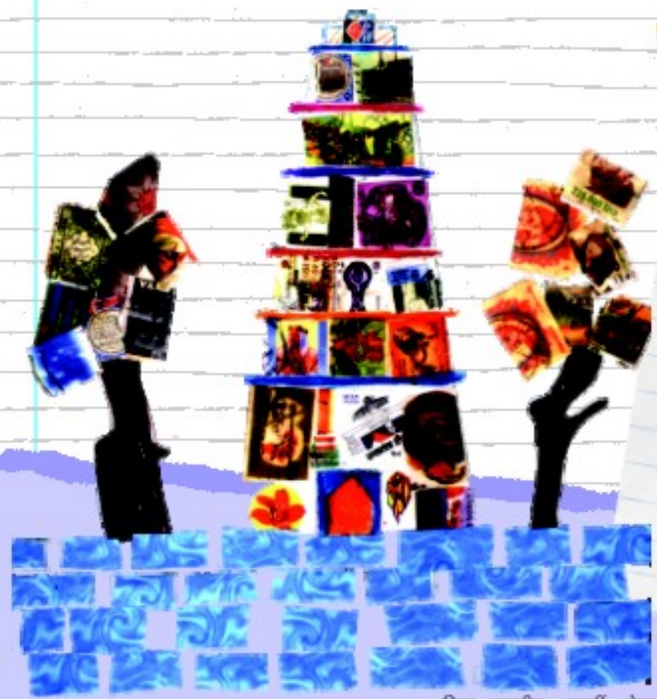

–निदा आफरीन, आठवीं, भोपाल

जब बच्चों ने देखा चूहा

जब बच्चों ने देखा चूहा।
चूहा भागा, अपने बिल में।।
बिल्ली ने भी, देखा चूहा।
चूहे ने भी, देखी बिल्ली।।
बिल्ली भागी, उसके पीछे।
डर के चूहा, भागा बिल में।।
बच्चे दौड़े, बिल्ली के पीछे।
बिल्ली भागी, अपने घर में।।
जब बच्चों ने देखा चूहा।
चूहा भागा, अपने बिल में।।

–ज्ञान, पाँचवीं, कानपुर, उ. प्र.

–नाम, पता नहीं लिखा

बड़ा मज़ेदार

आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।
जब इसको चूहे ने खाया
बिल्ली को भी मार भगाया।
आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।
जब इसको चींटी ने खाया
हाथी को भी मार भगाया।
आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।
जब इसको बकरी ने खाया
शेर को भी मार भगाया।
आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।
जब इसको पतलू ने खाया
मोटू को भी मार भगाया।
आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।
जब इसको कुत्तों ने खाया
चोरों को भी मार भगाया।
आहा टमाटर, आहा टमाटर
बड़ा मज़ेदार।

–आशीष कुमार, छठी, कानपुर, उ. प्र.

चूहा, शेर और भूत

एक जंगल था। बहुत बड़ा था। उसमें एक घर था। उस घर में एक चुहिया और एक शेर रहते थे। शेर ने चुहिया से कहा "अपन गेट बन्दकर लेते हैं। भूत आ जाएगा।" तभी वहाँ भूत आ गया। लेकिन चुहिया और शेर तो सो गए थे। फिर वहाँ एक जानवर आया। भूत उससे डरने लगा। जानवर को देखकर भागने लगा। फिर भाग गया।

–खुशी, पहली, जयपुर

सूरज और घर

एक घर था। वह बहुत प्यारा था। उसके लोगों ने उसे छोड़ दिया था। सूरज उसका दोस्त था। सूरज उसको सम्भालता था। सूरज और घर साथ-साथ रहते थे। वह दोनों कभी कट्टी नहीं होते थे। सूरज को बहुत बुरा लगता था कि घर अकेला है। एक दिन वहाँ कोई आ गया। वह वहाँ रहने लगा। सूरज बहुत खुश हुआ कि घर में कोई आ गया। उसने सोचा कि अब घर अकेला नहीं है। और वह घर को प्यार से रखने लगा।

–शारदा, दूसरी, होशंगाबाद, म. प्र.

मेरा पन्ना

–अस्सू-कूनी,धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश

—मोहम्मद अली, मुम्बई

एक कोलिया था और एक ऊँट था

एक कोलिया था और एक ऊँट था। कोलिया ने तरबूज़ की एक बाड़ी देखी। कोलिया ऊँट के पास आया और बोला, "ऊँट मामा, ऊँट मामा चलो तरबूज़, ककड़ी खाने जाते हैं।"
ऊँट बोला, "चलो चलते हैं।"
कोलिया ने कहा, "ऊँट मामा मुझे तो तैरना नहीं आता है।"
ऊँट ने कहा, "तुम मेरे कँधे पर बैठ जाओ।" कोलिया ऊँट के कँधे पर बैठ गया। कोलिया और ऊँट तरबूज़ खाने चले गए। दोनों तरबूज़, ककड़ी खाने लगे। कोलिया ने खा लिया। कोलिया ने ऊँट से कहा, "ऊँट मामा मुझे तो गाना गाने की इच्छा हो रही है।" ऊँट ने कहा, "अभी मुझ को खाने दे।" कोलिया गाना गाने लगा। उसको सुनकर तरबूज़ वाला आ गया। उसने ऊँट को बहुत मारा। और कोलिया ने ऊँट से कहा, "ऊँट मामा, ऊँट मामा मुझे पीठ पर बैठा लो।" ऊँट ने कहा, "नहीं, तुमने मुझे मार खिलवाई।" कोलिया नदी में बह गया।

—प्रस्तुतिः आशा मर्शकोले, चौथी, चिरमाटेकरी, बैतूल, म. प्र.

— दीपा सिंह, छवी, कानपुर, उ.प्र.

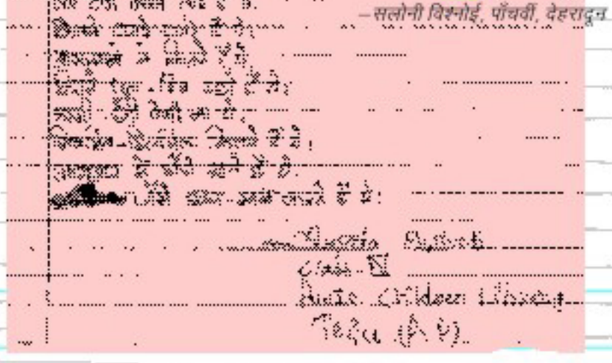

—सलोनी बिश्नोई, पाँचवीं, देहरादून

मौत को बुलावा

एक प्यारे से दिन
सूखी-सी ज़मीन पर
खुली-सी जगह पर
एक मासूम-सा चेहरा लिए
सूखी-सी ज़मीन पर
उड़ती धूल
सूखती फसल
और सुबुकते लोग
प्रार्थना करते
विनती करते लोग
हमें बारिश दो
हमें बारिश दो।
भूख से उड़ते और
गुस्से से मरते पंछी
सूखी ज़मीन पर
और आकाश में एक भी बादल नहीं।

—शिवांगी, पता नहीं लिखा

नीलकण्ठ

वेद लाड, सातवीं, दिल्ली

मैं अपने भाई और दादाजी के साथ कान्हा गया था। हम 22 मार्च को भोपाल से निकले। कान्हा भोपाल से 500 किमी. दूर है। हम कार से गए थे। कान्हा पहुँचने में पूरा दिन लग गया। जब हम कान्हा पहुँचे तो 8 बज चुके थे। जब मेरे दादाजी एक अंकल से बात कर रहे थे तो मैं और मेरा भाई रात में ही घूमने चले गए। पहले हमने एक खरगोश देखा। उसके बाद जंगली भैंसों का और चीतल का झुण्ड देखा। फिर हम गाँव में वापस आ गए।

अगले दिन हमने फोटो खींचे। हमने मादा बारहसिंगों का झुण्ड देखा और सड़क के नज़दीक बैठी बिल्ली को देखा। चीतल फूल खाने में लगे हुए थे जो बन्दरों की उछल कूद के कारण गिर गए थे। एक पेड़ पर कोयल गीत गा रही थी। हमने एक मादा जंगली भैंसा और उसके बच्चे की फोटो ली। दो अलग-अलग प्रजातियों के गिद्ध भी देखे। एक मोर ने भी हमारा रास्ता काटा।

दोपहर में हम बामहन्दादर गए। यह घास का मैदान है लेकिन रेगिस्तान जैसा। जानवरों का कोई नामोनिशान नहीं। जब हम वहाँ से वापस लौट रहे थे तो रास्ते में हमें एक बाघ मिला। वह सड़क पर टहल रहा था। हमने उसका पीछा करना शुरू किया। उसे बुरा नहीं लगा कि कोई चीज़ पीछा कर रही है। हम उसकी बाजू से तस्वीर लेना चाहते थे। हमने ड्राइवर से कहा कि वो गाड़ी को उसके थोड़ा पास ले जाए। बाघ दाईं ओर हट गया जैसे हमें साइड दे रहा हो। फिर वह रुका जैसे कह रहा हो कि मैंने तुम्हें साइड दे दी है ना, अब जाओ। लेकिन हम नहीं गए। ऐसा दो बार हुआ। फिर वह बाईं तरफ गया और जैसे बोला कि अब तुम जा सकते हो। फिर वह जंगल में चला गया। हम उसे 7 मिनट तक देखते रहे।

अगली सुबह हमने शरावन्तल में बारहसिंगा देखा और सुप्पखर गए। सुप्पखर के रास्ते में हमने एक बाघिन देखी, घने जंगल में। सुप्पखर में ब्रिटिश सरकार ने 1910 में एक विश्राम घर बनाया था। यह सौ साल पुराना है। इसकी छत घास की बनी है। हमने इसके सामने कैम्प फायर किया, जब बारिश हो रही थी। अगले दिन हमने हनी बजार्ड का एक जोड़ा देखा लेकिन हम उसकी फोटो लेते उससे पहले ही वो उड़ गए। उसी दिन जब हम किसली पहुँचे तो एक बन्दर व उसका बच्चा देखा। यह कान्हा में हमारा आखिरी दिन था।

अगले दिन हम भोपाल वापस आ गए।

गौर

हनी बजार्ड

गिद्ध

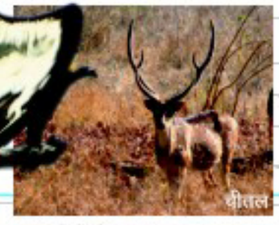

चीतल

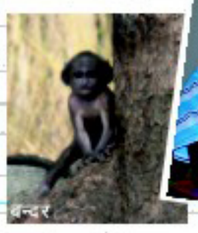

बन्दर

सभी फोटोः वेद लाड